स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगढ़ के समाचार–पत्रों की भूमिका (1920–1947)

डॉ. (श्रीमती) सीमा पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग
गुरूघासीदास विश्वविद्यालय
बिलासपुर (छ.ग.)

समाचार पत्र आधुनिकता की एक विशिष्ट उपलब्धि है। भारत में आधुनिकता का प्रवेश नव–जागरण या पुनर्जागरण के साथ हुआ। पुर्तगालियों द्वारा सन् 1550 में एक प्रेंस की स्थापना भारत में की गई। भारत में समाचार पत्रों के जन्मदाता के रूप में ''जेम्स आगस्ट हिक्की'' ने 19 जनवरी 1780 में पहला भारतीय पत्र प्रकाशित किया। हिक्की ने कलकत्ता में अपने समाचार पत्र ''बंगाल गजट'' या ''कलकत्ता जरनल एडवटाईजर'' में तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स और उच्चतम् न्यायालय के न्यायाधीश सर एलिजा इम्पे के दोषपूर्ण कार्यों की आलोचना की। किन्तु ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी अपने विरूद्ध किसी भी प्रकार के प्रकाशन सहन नहीं कर सकती थी अतः हिक्की का प्रेस जब्त कर कंपनी ने बंगाल गजट का अंत कर दिया एवं हिक्की को बंगाल छोड़ना पड़ा। नवंबर 1780 में प्रकाशित ''इंडिया गजट'' दूसरा भारतीय पत्र था। इसके पश्चात् तो पत्रों के प्रकाशन में निरंतर वृद्धि होती गई। किन्तु इन पत्रों में भारतीय हितों की घोषणा तथा संरक्षण का अभाव था।

भारतीय समाचार पत्रों का श्रेय राजा राम मोहन राय को दिया जाता था। राजा राम मोहन राय ने सामाजिक समस्याओं से संबंधित एक बंगला साप्ताहिक ''संवाद कौमुदी'' का प्रकाशन दिसंबर 1821 में किया। 16 फरवरी 1826 को पहली बार ब्रिटिश सरकार ने हिन्दी अखबार निकालने की अनुमति प्रदान की। इसी वर्ष 30 मई को ''उदन्त मार्तण्ड'' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन कलकत्ता से किया गया। 1858 के बाद के समाचार पत्रों की यह विशेषता रही कि इनसे भी भारतीय जनमत जागृत हुआ। 1885 तक समाचार पत्रों में राजनीति पर कोई संपादकीय नहीं लिखा जाता था। किन्तु इस काल में कांग्रेस की स्थापना के पश्चात् राजनीतिक गतिविधियों पर संपादकीय लिखा जाने लगा।

भारतीय समाचार पत्रों का विकास इन दिनों तीव्रता से हो रहा था तथा राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न करने में उनका सहयोग होता था, किन्तु यह भी सच है कि उन पत्रों की छाप स्पष्ट रूप से छत्तीसगढ़ में भी समाचार पत्रों पर पड़ी और उनका प्रचलन प्रारंभ हुआ और समग्र क्षेत्र राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी निभाने के लिए एक सूत्र में बंधा।

बिलासपुर पेण्ड्रा से पं.माधवराव सप्रे ने छत्तीसगढ़–मित्र का प्रकाशन प्रारंभ कर छत्तीसगढ़ में प्रथम मासिक पत्रिका प्रारंभ की।

1920 में हुए असहयोग आंदोलन के फलस्वरूप विभिन्न समाचार पत्रों ने भारतीय जनमानस को प्रेरित किया, जिसकी प्रतिक्रियाएं छत्तीसगढ़ से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों पर भी पड़ी। महाकौशल से 1920 में ''कर्मवीर'' का प्रकाशन हुआ। इसका प्रकाशन राष्ट्रसेवा लिमिटेड नामक संस्था द्वारा किया गया। ''कर्मवीर'' उत्कृष्ट साहित्यिक समाचार पत्र के साथ राष्ट्रीय पत्र भी था। 1938 में सुभाषचंद्र बोस ने कहा था ''पिछले चौदह वर्षों के कर्मवीर राष्ट्रीय महासभा के झण्डे को ऊँचा रखे हैं और प्रति सप्ताह हमारे देशवासियों को प्रेरणात्मक संदेशों से अनुप्रेरित करता है।

1920 में मुंगेली (बिलासपुर) से प्रकाशित होने वाले ''भानुदय'' मासिक पत्र से छत्तीसगढ़ में समाचार पत्रों का विकास पुनः आरंभ हुआ। इस पत्र में छत्तीसगढ़ के ईसाई समाज का पूर्ण विवरण उद्धुत रहता था। यह मुख्यतः सामाजिक पत्रिका थी किन्तु यह भी शीघ्र ही बंद हो गयी। 1923 में रायगढ़ के चन्द्रपुर नामक स्थान से एक मासिक पत्र ''छत्तीसगढ़'' मनोहर प्रसाद मिश्रा के संपादकत्व में प्रकाशित किया गया। 1925 में ''छत्तीसगढ़ मिश्र'' की अभिपूर्ति के लिए बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट कौंसिल द्वारा कुलदीप सहाय के संपादकत्व में ''विकास'' मासिक समाचार पत्र का प्रकाशन किया गया। 1927 में महाकौशल पत्रिका का प्रकाशन नागपुर से किया गया तथा 1933 में इसे रायपुर से दैनिक रूप से प्रकाशित करना प्रारंभ किया गया। इसके आरंभिक संपादकों में सीताचरण द्विवेदी एवं सुन्दरलाल त्रिपाठी के नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

केशव प्रसाद वर्मा और स्वराज प्रसाद त्रिवेदी के संपादकत्व में हिन्दी साहित्य मण्डल रायपुर से 1935 में एक मासिक पत्रिका ''आलोक'' का प्रकाशन किया गया। इन समाचार पत्रों का महत्व छत्तीसगढ़ की साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के कारण था।

1935 का वर्ष छत्तीसगढ़ में समाचार पत्रों के इतिहास में स्वर्णिम भोर था। इस वर्ष डिस्ट्रिक्ट कौसिल रायपुर द्वारा पंडित सुन्दरलाल त्रिपाठी के संपादकत्व में मासिक पत्रिका ''उत्थान'' का प्रकाशन किया गया। यह दो वर्षो तक ही कार्य कर सकी। इस पत्रिका में शिक्षा और साहित्य पर विशेष सामग्री प्रकाशित की जाती थी। 1936 में दुर्ग से ''हेहय वंश'' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया गया, जिसके संपादक उदय प्रसाद ''उदय'' थे। इस मासिक पत्रिका का मूल उद्देश्य जाति सुधार, समाज गठन एवं साहित्यिक प्रेरणा से साथ ही जन समुदाय को जागृत करना था। इसी वर्ष धमतरी से ''नव युवक'' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया गया।

छत्तीसगढ़ में कवियों ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कर मार्क्सवादी सिद्धांतों की स्थापना छत्तीसगढ़ में की। यहां मार्क्स की विचारधारा का सर्वाधिक प्रचार 1926 के बाद हुआ। ''संज्ञा'' नामक मासिक पत्र में प्रकाशित कुंज बिहारी चौबे के गीत ''क्रांतिमान'' में मार्क्सवादी विचारधारा की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

1922 में ''श्री कृष्ण जन्मस्थान'' समाचार के लेखक पंडित सुन्दरलाल शर्मा थे। उन्होंने जेल के भीतर की घटनाओं एवं राजनीतिक चिंतन का उल्लेख किया। हस्तलिखित यह पत्रिका भारत की तत्कालीन दशा का बहुमूल्य दस्तावेज कहा जा सकता है। राष्ट्रीयता के विकास में इस पत्रिका का बहुत महत्व है। री शर्मा ने छत्तीसगढ़ी भाषा में साहित्य का सृजन किया। 1937 में ''कांग्रेस पत्रिका'' के साथ बिलासपुर से ''सचेत'' एवं सरगुजा से ''सरगुजा संदेश'' का प्रकाशन किया गया। इन समाचार पत्रों में साहित्य, समाज, राजनीति, शिक्षा एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रकाशन किया जाता था। 1941 तक छत्तीसगढ़ से निकलने वाले विभिन्न समाचार पत्र मासिक थे। किन्तु इसके पश्चात् साप्ताहिक समाचार पत्रों का प्रकाशन हुआ। इस मध्य 1939 में सरकारी प्रेस के माध्यम से ब्रिटिश सरकार ने सरकारी समाचारों के लिए एक साप्ताहिक अखबार ''बस्तर समाचार'' का प्रकाशन जगदलपुर से किया। छत्तीसगढ़ में यह एक मात्र सरकारी समाचार पत्र था। इसी वष्र रायगढ़ से ''रायगढ़ समाचार का प्रकाशन ए.एम. बाजपेयी, मनोहर मिश्र एवं वनवासी शुक्ला के संपादकत्व में प्रारंभ किया गया।

1941 में बिलासपुर से एक साप्ताहिक पत्र ''पराक्रम'' का प्रकाशन एवं संपादन रामकृष्ण पाण्डेय ने किया। इस समय रायपुर से केशव प्रसाद वर्मा के संपादकत्व में ''अग्रदूत'' का प्रकाशन किया गया। इस पत्र में ब्रिटिश सरकार की नीतियों की घोर आलोचना की जाती थी। इस पत्र के सह संपादक थे स्वराज प्रसाद त्रिवेदी। इस प्रकार तत्कालीन समाचार पत्रों में अग्रदूत ने अपनी अलग पहचान बनाई। सितंबर 1942 में संपादक एवं सह संपादक के घरों की तलाशी ली गई और अखबार पर सेंसर लागू किया गया। श्री केशव प्रसाद वर्मा को कारावास का दण्ड भुगतना पड़ा, साथ ही अल्पकाल के लिए इस पत्रिका का प्रकाशन स्थगित करना पड़ा।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन का राष्ट्रव्यापी प्रभाव था। 1942 के आंदोलन का संचालन रायपुर के आनंद समाज पुस्तकालय से हो रहा था। यहां से कार्यक्रम निर्धारित किये जाते थे। यहां गोल बाजार स्थित बाके बिहारी मंदिर में गयाचरण त्रिवेदी द्वारा एक सूचना पटल (ब्लेक बोर्ड) पर ''आज की खबर'' शीर्षक से तत्कालीन घटनाओं का वर्णन लिखते थे।

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ब्रिटिश सरकार समाचार पत्रों से भयभीत थी। केन्द्रीय सरकार के गृह विभाग ने मुख्य सचिवों को टेलीग्राम द्वारा निर्देशित किया था कि कांग्रेस के आंदोलन की जानकारी हमें नहीं मिल पा रही है अतः हर संभव प्रयास कर कांग्रेस के प्रकाशनों एवं प्रसार को रोका जाए साथ ही कांग्रेस के पदाधिकारियों के घरों पर छापामार कर इस प्रकार की योजना संबंधी कागजों को जब्त किया जाए।

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अधिकांश समाचार पत्र–पत्रिकाओं का संपादन महाकौशल क्षेत्र से किया गया। 1943 में शिव नारायण द्विवेदी से संपादकत्व में साप्ताहिक पत्र ''सावधान'' प्रकाशित किया गया। यह समाचार पत्र राष्ट्रीय विचारधारा से ओत–प्रोत था। इस पत्रिका में संपादक के आक्रामक तेवर के कारण उन पर राजद्रोह के पांच मुकदमें चलाए गए। इस पत्र की विशेषता थी कि वह पत्र लोगों को अंग्रेजी सत्ता से सावधान करता था एवं उन्हें राष्ट्रीय हित के पथ पर चलने को प्रेरित करता था। किन्तु इस पत्र की आयु अल्प रही। 1944 में रायगढ़ से ''आजकल'' का प्रकाशन भी महत्वपूर्ण रहा। 1935 में नागपुर से प्रकाशित महाकौशल समाचार पत्र का संपादन पं. रविशंकर शुक्ल के नेतृत्व में किया गया। पुनः 6 मार्च 1946 से इसका प्रकाशन स्वराज प्रसाद त्रिवेदी के संपादकत्व में प्रारंभ हुआ। छत्तीसगढ़ के साहित्य का भी इसमें संवर्धन होता रहा। इसी वर्ष खैरागढ़ तथा रायपुर से रामकृष्ण अग्रवाल ने हिन्दी मासिक ''श्री'' का प्रकाशन किया ''सरगुजा संदेश'' एवं ''बस्तर समाचार'' जैसे साप्ताहिक समाचार पत्रों ने समय की मांग को देखते हुए अनेक लेख प्रकाशित किये।

1947 में रायपुर से छत्तीसगढ़ ''केसरी'' साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन किया गया जो कालान्तर में (1952) ''हिन्दी केसरी'' के नाम से प्रकाशित हुआ। इसी वर्ष दुर्ग से ''प्रजाबंधु'' एवं ''जिन्दगी'' नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन केदारनाथ झा के संपादकत्व में हुआ।

इन समाचार पत्रों की यह विशेषता थी कि इनमें राष्ट्रीयता की अलख विदेशी समाचारों या विदेशों में घटित घटनाओं का वर्णन कर जगाई जाती थी। इसका एक उदाहरण ''उत्थान''

पत्रिका में पंडित रविशंकर शुक्ल के एक लेख ''आयरलैण्ड का इतिहास'' के क्रमिक प्रकाशन से लिया जा सकता है। जिसमें स्पष्ट था कि किस तरह आयरलैण्ड के इतिहास में राष्ट्रीय आंदोलन के दिनों में विद्यार्थी और शिक्षक शहीद हुए। ''उत्थान'' पत्रिका ने कांग्रेस को एक मात्र जन संस्था एवं स्वतंत्रता के अग्रदूत के रूप में प्रतिष्ठित किया। पंडित रविशंकर शुक्ल ने एक टिप्पणी कांग्रेस पत्रिका में प्रकाशित की ''भारत में अंग्रेजी शासन के इतिहास का अधिक भयावह समय आ गया है। हमारे पास अहिंसा के अतिरिक्त और कोई दूसरा हथियार नहीं है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम लोग सत्य और अहिंसा के पथ पर तथा न्याय के बल पर हानि उठाते हुए भी अवश्य विजयी होंगे।''

1900 से 1947 तक छत्तीसगढ़ से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र–पत्रिकाएं मासिक या साप्ताहिक थी। इनमें लिखे गए लेखों की राष्ट्रीय छात्र जनमानस पर स्पष्ट दिखलाई देती है। इन पत्रों के अलावा छत्तीसगढ़ से प्रथम दैनिक समाचार पत्र ''महाकौशल'' का प्रकाशन किया गया। राष्ट्रीय आंदोलन के स्वरूप को उग्र स्वरूप प्रदान करने में समाचार पत्रों ने सराहनीय कार्य किया। प्रेस संबंधी प्रतिबंध के कारण संपादकों एवं समाचार पत्रों को क्षति उठानी पड़ी। अनेक प्रेस बंद कर दिये गए। संपादकों ने अंग्रेजों के विरूद्ध अपने संपादकीय का प्रकाशन किया जिसका प्रभाव जनमानस पर पड़ा जो कि राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न घटना चक्रों के संपादन से पुष्ट होता है।

––0––

संदर्भ :–

1. मजुमदार, डॉ. रमेश चंद्र : द ब्रिटिश पैरामाउन्टेसी एण्ड इंडियर रेनॉसा, भाग–2, पृ. 34–35
2. मिश्र, डॉ. कृष्ण बिहारी : हिन्दी पत्रकारिता 1985, पृ. 40
3. शिव कुमार मित्र ने लिखा है : बंगला साप्ताहिक ''संवाद कौमुदी'' के आदि संचालक ताराचन्द्र दत्त और संपादन भवानीचरण बंदोपाध्याय करते थे, बाद में इसे राजा राम मोहन राय ने लिया था। उद्धत्त पृ. 42
4. अनुजा, डॉ. मंगला : भारतीय पत्रकारिता नींव के पत्थर 1966, पृ. 39
5. श्रीधर, विजय दत्त : मध्यप्रदेश में पत्रकारिता उद्‌भव और विकास, पृ. 67
6. गुप्ता मदन लाल : छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन, भाग–2, भारतेदु हिंदी साहित्य समिति बिलासपुर (म.प्र.) पृ. 371
7. रायपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर : 1973, पृ. 86
8. होम डिपार्टमेंट पॉलिटिकल फाईल नं. 3/13/42, 1942, 6.65
9. मिश्र देवेश दत्त : स्वतंत्रता संग्राम, ''महाकौशल के समाचार पत्रों का योगदान'' पृ. 384
10. रिपोर्ट आम–न्यूज पेपर्स एण्ड पीरियोडिकल्स ड्यूरिंग फाइल नंबर 53/1/38, 1937 पृ. 21
11. माहेश्वरी रामगोपाल : शुल्क अभिनंदन ग्रंथ नागपुर, मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सममेलन–1955, जीवनी खंड पृ. 23
12. कांग्रेस पत्रिका : रायपुर, 29 फरवरी 1940, पृ.

––0––